दादा भगवान परिवार का

अप्रैल २०२२

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

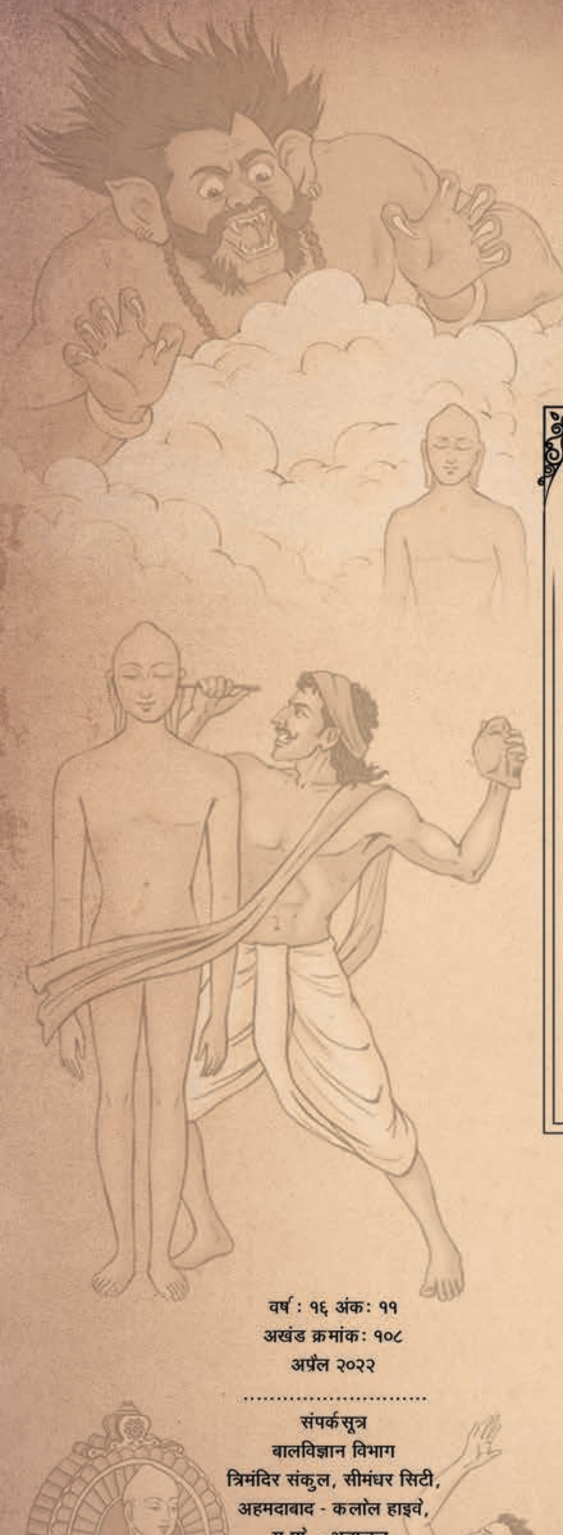

वीरों के वीर 'महावीर'

संपादकीय

क्या सच में हमारे जीवन में दुःख हैं? फिर भी हम रोते रहते हैं कि इसने मेरे साथ ऐसा किया और उसने वैसा किया... और फिर सामने वाले को मारते हैं या झगड़ा कर बैठते हैं।

हमें ऐसा लगता है कि सिर्फ हमें ही दुःख है। लेकिन ऐसा नहीं है, भगवान को भी भंयकर दुःख आए थे। हाँ, मैं भगवान महावीर की बात कर रहा हूँ। उन्होंने जीवन में जो दुख झेले थे उसका वर्णन सुनकर ही कलेजा काँप जाता है। तो भगवान ने तब क्या किया होगा? क्या उन्होंने हमारी तरह दुःख देने वाले को मारा या उसके साथ झगड़ा किया होगा?

तो चलो, इस अंक में हम भगवान महावीर की कथाएँ पढ़ते हैं। ऐसा उनमें क्या था कि जिसके कारण वे महावीर कहलाए और भगवान के रूप में पूजे जाने लगे।

- डिम्पल मेहता

वर्ष : १६ अंक : ११
अखंड क्रमांक : १०८
अप्रैल २०२२

....

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

ज्ञानी कहते हैं...

तीर्थंकर यानी क्या? जिनके हर कदम पर तीर्थ की स्थापना होती है वे तीर्थंकर कहलाते हैं। वे जगत् कल्याण करने के लिए ही घूमते रहते हैं। उनके हृदय में दिन-रात यही भावना होती है कि कैसे सभी जीवों को दु:खों से मुक्ति मिले, वे मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ें और मोक्षगति पाएँ।

२५०० वर्ष पहले भगवान 'महावीर' इस काल के अंतिम तीर्थंकर हुए। भगवान 'महावीर' क्यों कहलाए? क्योंकि उन्होंने अपने कर्मों से जबरदस्त फाइट की थी। भगवान महावीर की कर्मों को खपाने की शक्ति कोई और ही प्रकार की थी।

प्रश्नकर्ता : जब भगवान महावीर को असहनीय दु:ख पड़े थे तब देवताओं ने भगवान से प्रार्थना की थी कि वे उनसे हेल्प ले लें। फिर भी, भगवान ने उनकी हेल्प क्यों नहीं ली?

पूज्यश्री : देवताओं का जीवन तीर्थंकर भगवान की सेवा के लिए ही होता है। देवगण सभी प्रकार से भगवान को हेल्प कर सकते हैं। लेकिन भगवान ने कहा कि "मुझे अपना कर्म पूरा करने दो। मैं अगर आपकी सेवा लूँगा तो मेरा कर्म अधूरा रह जाएगा।"

जैसे कि, मैंने किसी से १०,००० रुपये लिए हों और जब वह अपने रुपये वापस लेने आए तब मैं किसी दूसरे के पास से १५,००० लेकर उसको दूँ, तो मेरा दूसरा लोन तो बाकी ही रहेगा न? १०,००० तो चुका दिए पर १५,००० का लोन मेरा बाकी रहा। जो मुझे कभी न कभी चुकाना तो पड़ेगा ही।

प्रभु ने कहा, "मुझे हेल्प मत करो। मेरा कर्म पूरा होने दो।" केवलज्ञान होने तक भगवान ने अपनी शक्ति द्वारा, ज्ञान की शक्ति द्वारा, सभी कर्मों का निकाल किया। भगवान महावीर ने समता में रहकर अपने कर्मों को खपाया।

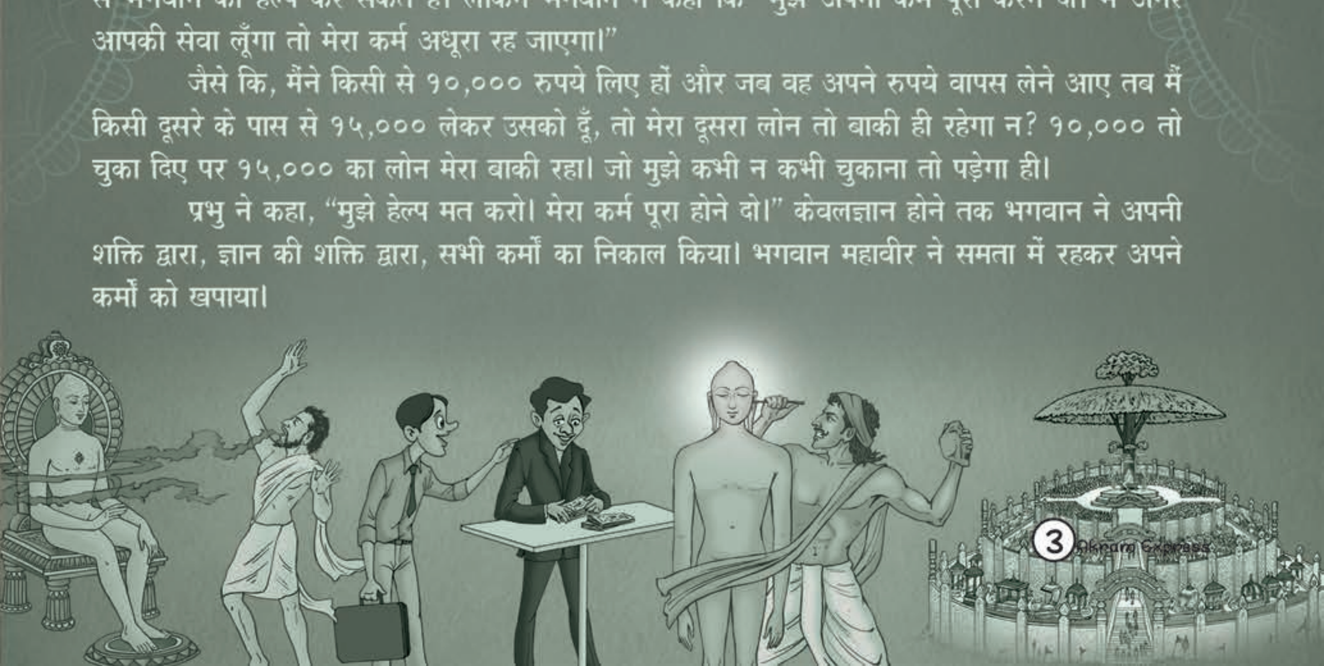

यह तो नई ही बात है!

उपसर्ग अर्थात् बाहर से आए हुए भयंकर दुःख।

उदाहरण के तौर पर : भयंकर अपमान आए, कोई गाली दे, कड़वे शब्द बोले, मारे - ये सब उपसर्ग कहलाते हैं।

किसी को क्षमा करना अर्थात् पहले सामने वाले की भूल दिखाई दे फिर उसे माफ करना। भगवान को तो किसी की भी भूल हो ऐसा लगता ही नहीं था, उन्हें तो अपना ही कर्म दिखाई देता था। इसलिए उन्हें किसी को क्षामा करना ही नहीं पड़ता! वह सहज क्षामा कहलाती है।

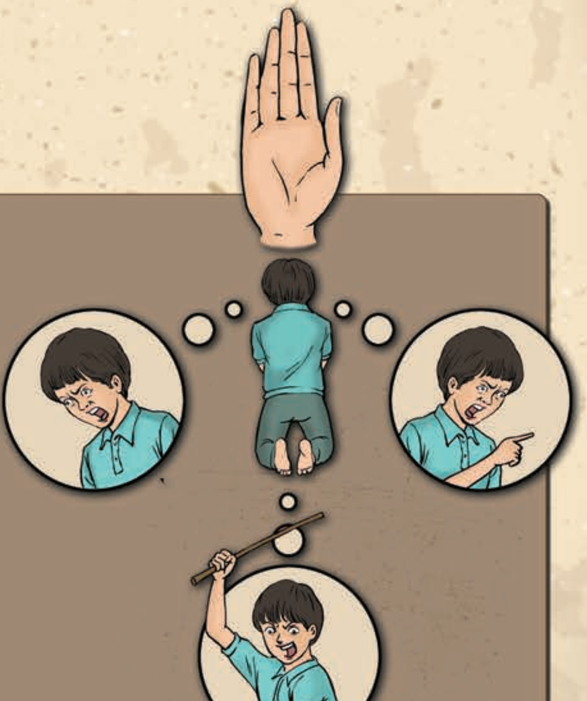

शूलपाणी यक्षदेव

एक बार भगवान महावीर विहार करते-करते अस्थिक गाँव के द्वार पर आ पहुँचे। वहाँ दलदल और कीचड़ से भरी एक काली नदी बहती थी। नदी के किनारे यक्ष* का मंदिर था।

शाम का समय था। मंदिर के बाहर पुजारी इन्द्रशर्मा बैठा था। तेजस्वी मानव को देखकर उसने पूछा, "यहाँ कैसे आना हुआ?"

"मैं यहाँ पर एक रात के लिए रुकना चाहता हूँ। रुकने के लिए मुझे एक कोना ही काफी है।" महावीर ने कहा।

"इस मंदिर में रहना बहुत मुश्किल है। और रात को रुकना तो और भी मुश्किल है। इस मंदिर का देव 'शूलपाणी' किसी भी मनुष्य को जीवित नहीं छोड़ता। ऐसा कहा जाता है कि एक बार धनदेव नाम का एक सेठ किराने की पाँच-सौ गाड़ियाँ लेकर यहाँ से गुजर रहा था। उसकी गाड़ियाँ कीचड़ से भरी इस वेगवती नदी में ऐसे फँस गईं कि बाहर नहीं निकल पा रही थीं! लेकिन धनदेव के पास एक बलवान बैल था। उस बैल ने पाँच-सौ गाड़ियों को बिना हानि पहुँचाए दलदल से बाहर निकाल दिया। लेकिन ऐसा करने में बैल बुरी तरह से घायल हो गया। वह वहीं ज़मीन पर गिर पड़ा। वह न तो

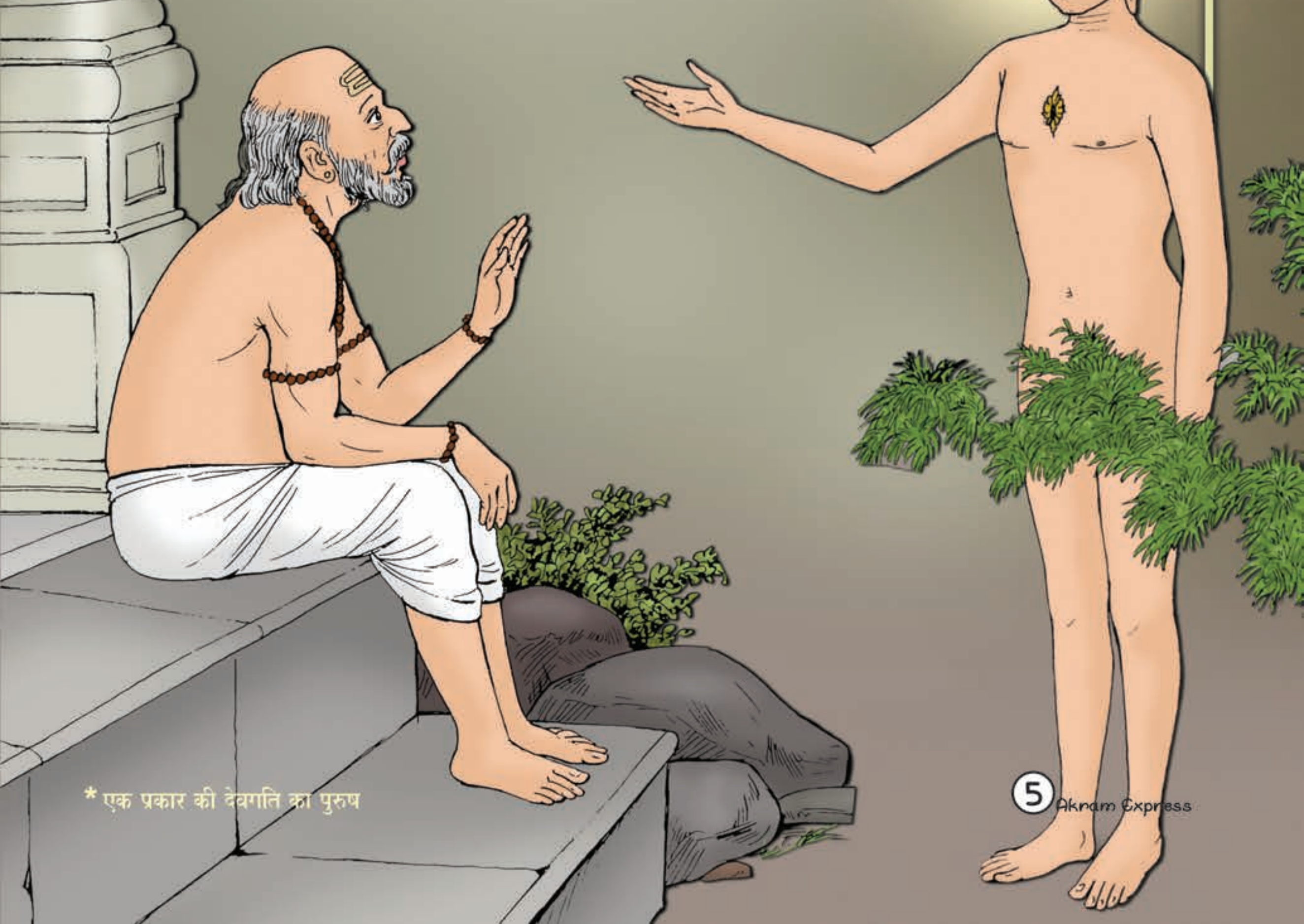

* एक प्रकार की देवगति का पुरुष

खड़ा हो पा रहा था और न ही हिल पा रहा था!"

धनदेव को अपने बैल से बहुत लगाव था। उसने अपने बैल की अच्छी तरह देखभाल करने के लिए गाँव वालों से अनुरोध किया और बदले में मुँहमाँगा धन देने की बात की लेकिन बैल का ख्याल रखना होगा। यह सुनकर गाँव के लोग बैल की देखभाल करने को तैयार हो गए। धनदेव ने उनको मुँहमाँगा धन दिया। बैल को खुब सहलाकर धनदेव ने अपना प्रेम व्यक्त किया और आँसुओं के साथ वहाँ से विदा हुआ।

गाँव के लोगों ने बैल की ठीक तरह से देखभाल नहीं की। वे उसे किसी दिन चारा देते, तो किसी दिन नहीं। एक दिन पानी पिलाते, तो अगले दो दिन तक कुछ भी नहीं देते। कड़ी गर्मी के दिनों में चारे और पानी के बिना बैल के प्राण निकल गए। वह मरकर व्यंतर** देव बना। देव बनकर वह गाँव वालों की खबर लेने लगा। आए दिन वह लोगों को मार डालता। अंत में उसको मनाने के लिए गाँव वालों ने इस मंदिर का निर्माण किया। उन्होंने मंदिर में पूजा, आरती करना, प्रसाद चढ़ाना शुरू किया और मुझे यहाँ का पुजारी बनाया। फिर भी, इस यक्ष का मिज़ाज बहुत खराब है। दिन की बात तो ठीक है, पर रात को यहाँ कोई नहीं रह सकता। पुजारी इन्द्रशर्मा ने अपनी बात पूरी की।

भगवान महावीर ने कहा, "मुझे एक रात के लिए यहाँ रुकने की अनुमति दीजिए!"

"इतना भय का वातावरण है फिर भी?"

"मैं अभय हूँ। किसी से डरता नहीं और किसी को डराता नहीं। आप निश्चिंत होकर मुझे अनुमति दीजिए।"

गाँव के लोगों ने उन्हें अनुमति दी। महावीर रात को वहाँ रुके।

अँधेरा होते ही मंदिर का पुजारी दरवाजा बंद करके चला गया। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था! मनुष्य तो क्या, जानवर को भी उस जगह से भय लगता था।

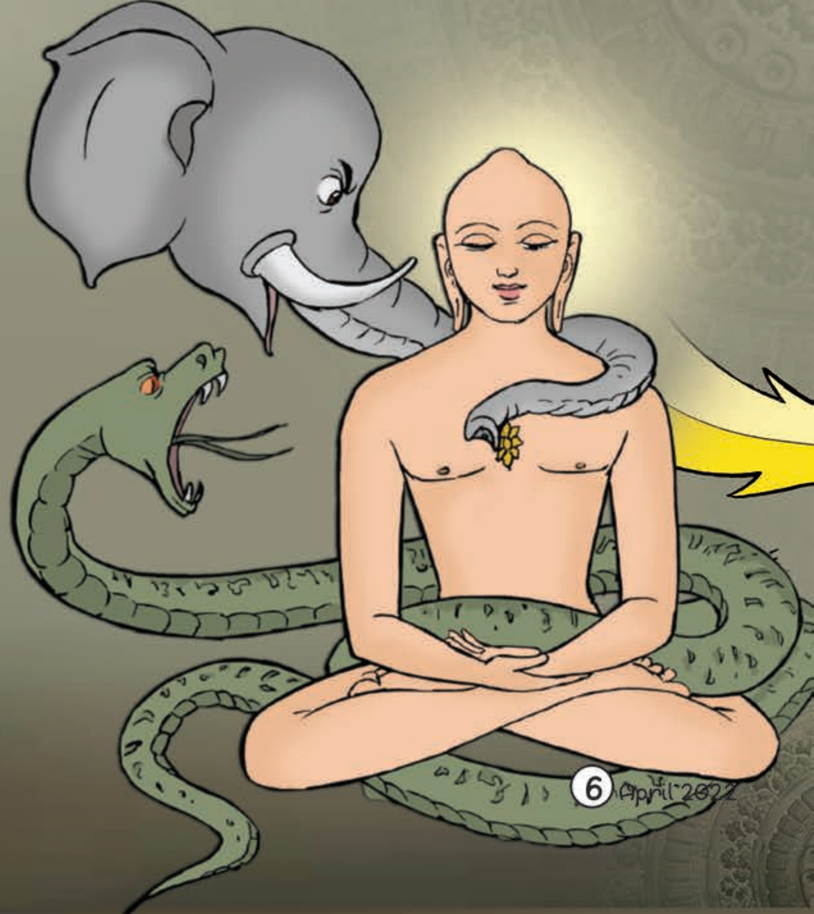

** देवगति का एक प्रकार

महावीर एक कोने में पालथी मारकर बैठ गए। अचानक दिल दहलाने वाला अट्टहास सुनाई दिया। तभी कोई जंगली हाथी दरवाजा तोड़कर अंदर आया और सीधा भगवान महावीर की तरफ लपका। हाथी ने उन्हें सूँड से पकड़ा, उठाया, पटका और पाँव के नीचे कुचल डाला! थोड़ी देर बाद हाथी अदृश्य हो गया। फिर बड़े-बड़े नाखून और दाँत वाला एक पिशाच*** प्रकट हुआ। वह अपने नाखूनों से भगवान महावीर का मांस नोचने लगा, दाँतों से चबाने लगा। लेकिन भगवान के मुख पर शांति थी। जैसे कि वह शांति कह रही हो, "आराम से भोजन करना भाई! भूखे मत रहना!"

पिशाच भी अदृश्य हो गया। तभी अचानक पाताल फाड़ के एक जहरीला साँप बाहर निकला। भगवान के नज़दीक जाकर वह बार-बार डंक मारने लगा। पर भगवान महावीर को कोई भय नहीं था, कोई वैर नहीं था।

और इस तरह पूरी रात ऐसे भयंकर उपसर्गों भरी बीती, लेकिन महावीर तो महा-वीर साबित हुए। अंत में वह व्यंतर देव आकर उनके चरणों में गिर पड़ा, 'मुझे क्षमा कीजिए!'

महावीर ने प्रेम से कहा, "मुझे तुमसे कोई वैर नहीं है। तुम तो मेरी कसौटी करने वाले मित्र हो।"

"मैं और मित्र? और वह भी आपका?" यक्ष को आश्चर्य हुआ।

"हाँ। मेरे क्या, तुम पूरे जगत् के मित्र बन सकते हो। सिर्फ मार्ग भूल गए हो। तुमने वैर का बदला वैर से लेने का प्रयत्न किया। पर वैर को कभी भी वैर से नहीं जीता जा सकता। वैर को हमेशा प्रेम से जीता जा सकता है, क्षमा से जीता जा सकता है। वैर से मुक्त हो जाओ।"

भगवान के करुणा भरे शब्द सुनकर उग्र व्यंतर देव थोड़ी देर में ही नम्र बन गया। उसका जलता हुआ हृदय शांत हो गया।

व्यंतर देव आनंद में आ गया और गीत गाने लगा।

इस प्रकार, भगवान ने अपने देह की परवाह किए बिना शूलपाणी व्यंतर देव को वैर की अग्नि में से बाहर निकालकर प्रेम और क्षमा के मार्ग पर चलना सिखाया।

*** हिंदु पौराणिक कथाओं के अनुसार पिशाच मांस खाने वाले राक्षस है।

चंडकौशिक

एक बार भगवान महावीर एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे थे। रास्ते में एक ग्वाले ने उन्हें यह कहते हुए रोका, "देवार्य, इस मार्ग पर कनकखल नाम का एक आश्रम है। वहाँ एक भयंकर जहरीला सर्प रहता है। उसका नाम चंडकौशिक है। उस साँप की दृष्टि भी जहरीली है। उसकी नज़र पड़ते ही मनुष्य जल जाता है।"

यह बात सुनकर भगवान के चेहरे पर भय की एक रेखा भी नहीं दिखाई दी। वे आगे बढ़ने लगे।

ग्वाले ने फिर से भगवान को रोककर कहा, "पहले आप मेरी बात सुनें, फिर आगे कदम बढ़ाएँ।"

कौशिक नाम का एक तापस आश्रम का कुलपति था। वह बहुत क्रोधी था। उस आश्रम के बगीचे में बच्चे खेलने के लिए आते थे। बच्चे वहाँ पर शरारत करते थे जो कौशिक को अच्छा नहीं लगता था। वह लकड़ी लेकर बच्चों के पीछे दौड़ता। डर के कारण बच्चे वहाँ से भाग जाते।

बच्चों ने चिढ़ाने के लिए कौशिक का नया नाम रखा : 'चंडकौशिक' चंड यानी गुस्सेबाज-कौशिक!

"एक दिन कौशिक कहीं बाहर गया हुआ था तब बच्चों ने बगीचे को तहस-नहस कर दिया। बगीचे की ऐसी हालत देखकर कौशिक बहुत क्रोधित हुआ। उसने पास में पड़ी कुल्हाड़ी उठाई और बच्चों के पीछे दौड़ा। बीच में एक गहरा गड्ढा था। तापस को दिखा नहीं और वह उस गड्ढे में गिर गया। उसकी कुल्हाड़ी उसी के सिर पर गिरी और वहीं पर उसकी मृत्यु हो गई। तापस मरकर साँप बन गया। और अब वह उस आश्रम में किसी को भी जीवित नहीं छोड़ता।" ग्वाले ने अपनी बात पूरी की।

भगवान ने ग्वाले को प्रेमभरी दृष्टि से देखा और अपने मार्ग पर आगे बढ़ गए। थोड़ी देर में वे आश्रम पहुँचे। चंडकौशिक साँप को मनुष्य की गंध आई। उसने भगवान के ऊपर जहर की पिचकारी छोड़ी। लेकिन उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसके द्वारा की गई विषवर्षा के बाद भी वे बिना हिले-डुले अडिग खड़े थे।

फिर उसने पास जाकर महावीर के अंगुठे पर जोर से डंक मारा। अंदर से सफेद दूध** जैसे रक्त का फव्वारा निकल पड़ा। लेकिन महावीर के चहरे से प्रेम छलक रहा था! क्रोध का भंडार चंडकौशिक यह देखकर स्तब्ध रह गया। तभी भगवान महावीर के मुँख से शब्द निकले, ऐसे

लगा मानो सूखी भूमी पर वर्षा हुई हो।

"चंडकौशिक, समझ! समझ! जो डरता नहीं, डराता नहीं वह वीर है! क्रोध का स्वभाव तो जलाना है। पहले खुद जलता है और फिर दूसरों को जलाता है, आग की तरह। क्रोध से हारकर तुमने कितने ही जन्म बिगाड़ दिए। लेकिन आज तुम हारकर जीत जाओ, चंडकौशिक।"

भगवान के सच्चे प्रेम भरे शब्दों से पत्थर दिल साँप भी पिघल गया। उसे अपना पिछला भव दिखाई दिया और उसे समझ में आया कि क्रोध के कारण उसने अपने कितने जन्म बिगाड़ दिए।

चंडकौशिक ने भगवान से क्षमा मांगी, "क्षमा करो करुणावतार! मैंने आपको जहरीला डंक मारा। और आपने मुझे ज्ञानरूपी अमृत पिलाकर मेरा कल्याण कर दिया।"

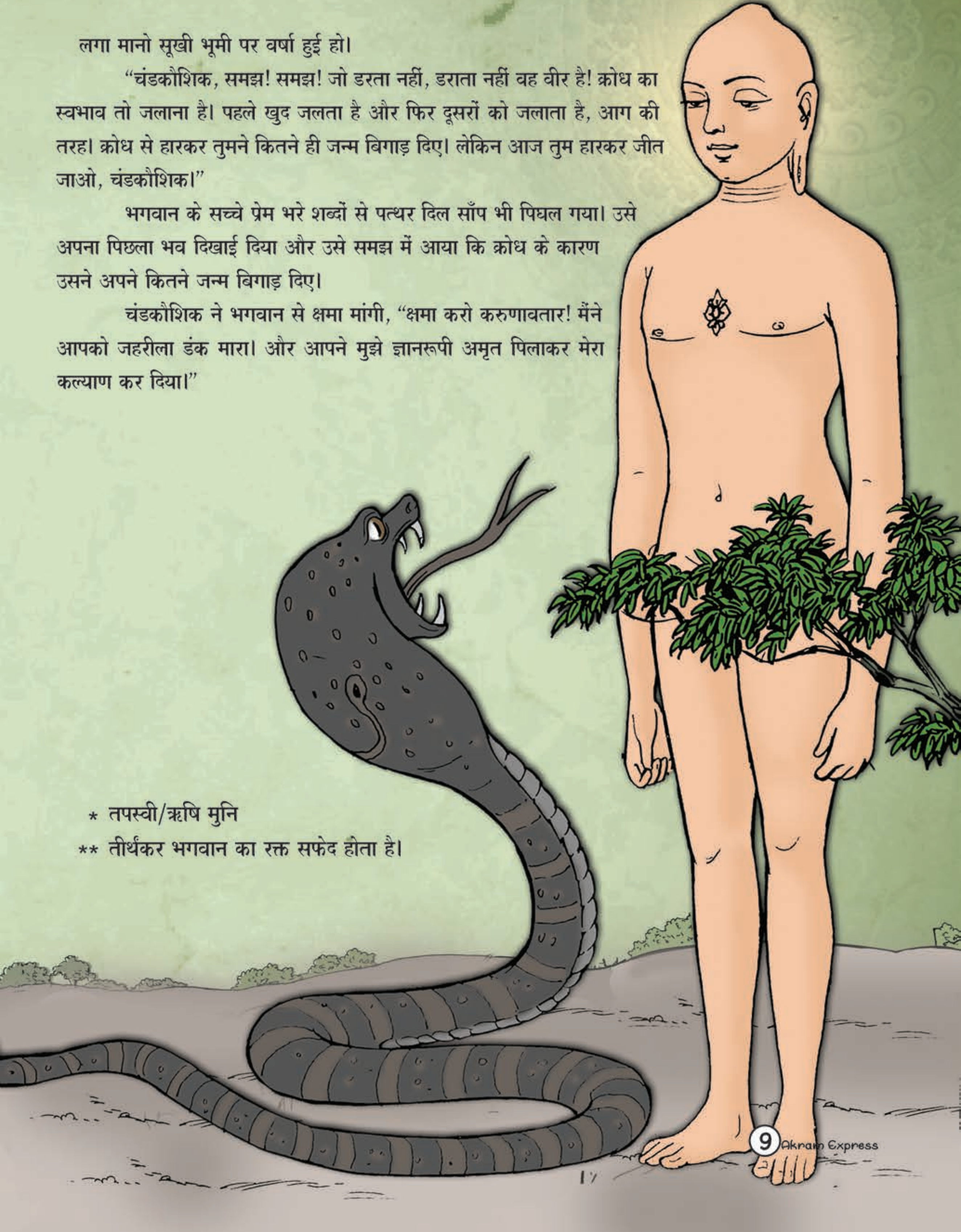

* तपस्वी/ऋषि मुनि

** तीर्थंकर भगवान का रक्त सफेद होता है।

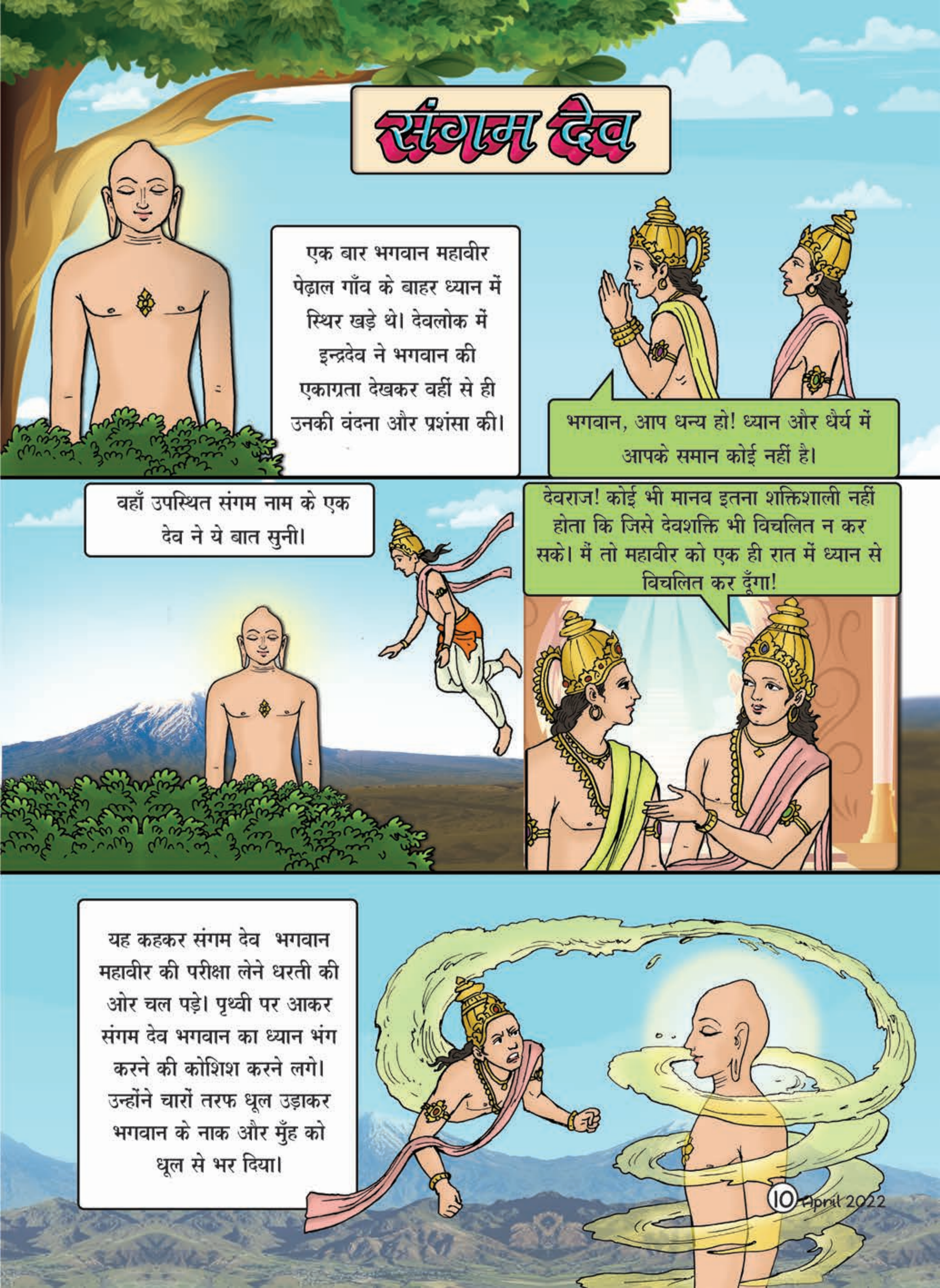

संगम देव
एक बार भगवान महावीर पेढ़ाल गाँव के बाहर ध्यान में स्थिर खड़े थे। देवलोक में इन्द्रदेव ने भगवान की एकाग्रता देखकर वहीं से ही उनकी वंदना और प्रशंसा की।
भगवान, आप धन्य हो! ध्यान और धैर्य में आपके समान कोई नहीं है।
वहाँ उपस्थित संगम नाम के एक देव ने ये बात सुनी।
देवराज! कोई भी मानव इतना शक्तिशाली नहीं होता कि जिसे देवशक्ति भी विचलित न कर सके। मैं तो महावीर को एक ही रात में ध्यान से विचलित कर दूँगा!
यह कहकर संगम देव भगवान महावीर की परीक्षा लेने धरती की ओर चल पड़े। पृथ्वी पर आकर संगम देव भगवान का ध्यान भंग करने की कोशिश करने लगे। उन्होंने चारों तरफ धूल उड़ाकर भगवान के नाक और मुँह को धूल से भर दिया।

साँप और बिच्छू को प्रभु के शरीर पर छोड़ दिया।
हाथी का रूप लेकर उन्होंने भगवान को सूँड से पकड़कर आकाश में उछाल दिया।
पिशाच बनकर मुँह में से ज्वालामुखी निकालकर भगवान को भस्म करने की कोशिश की।
भगवान के दोनों पैरों के बीच आग जलाकर खीर बनाई।

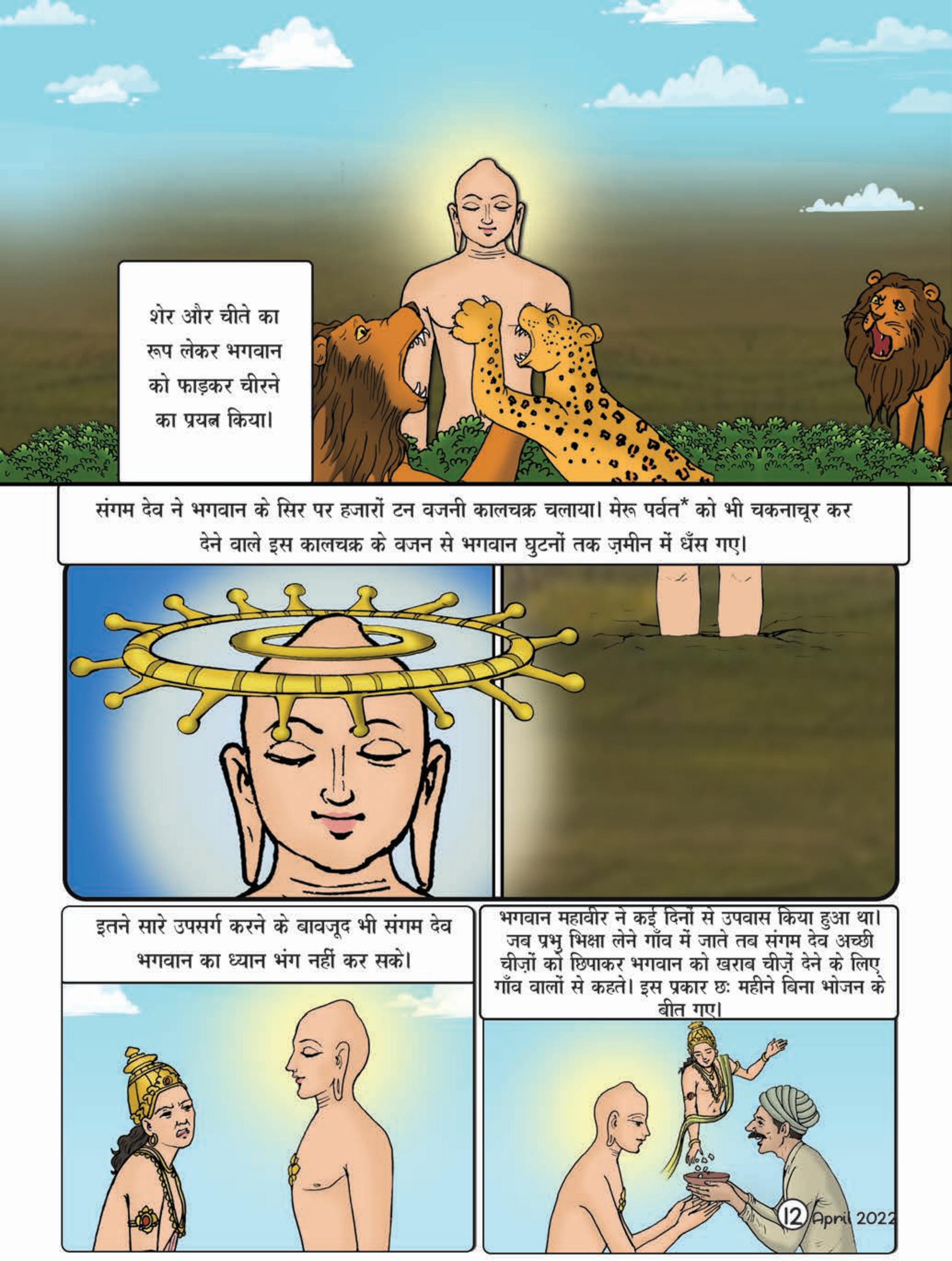

शेर और चीते का
रूप लेकर भगवान
को फाड़कर चीरने
का प्रयत्न किया।
संगम देव ने भगवान के सिर पर हजारों टन वजनी कालचक्र चलाया। मेरू पर्वत* को भी चकनाचूर कर
देने वाले इस कालचक्र के वजन से भगवान घुटनों तक ज़मीन में धँस गए।
इतने सारे उपसर्ग करने के बावजूद भी संगम देव
भगवान का ध्यान भंग नहीं कर सके।
भगवान महावीर ने कई दिनों से उपवास किया हुआ था।
जब प्रभु भिक्षा लेने गाँव में जाते तब संगम देव अच्छी
चीज़ों को छिपाकर भगवान को खराब चीज़ें देने के लिए
गाँव वालों से कहते। इस प्रकार छः महीने बिना भोजन के
बीत गए।

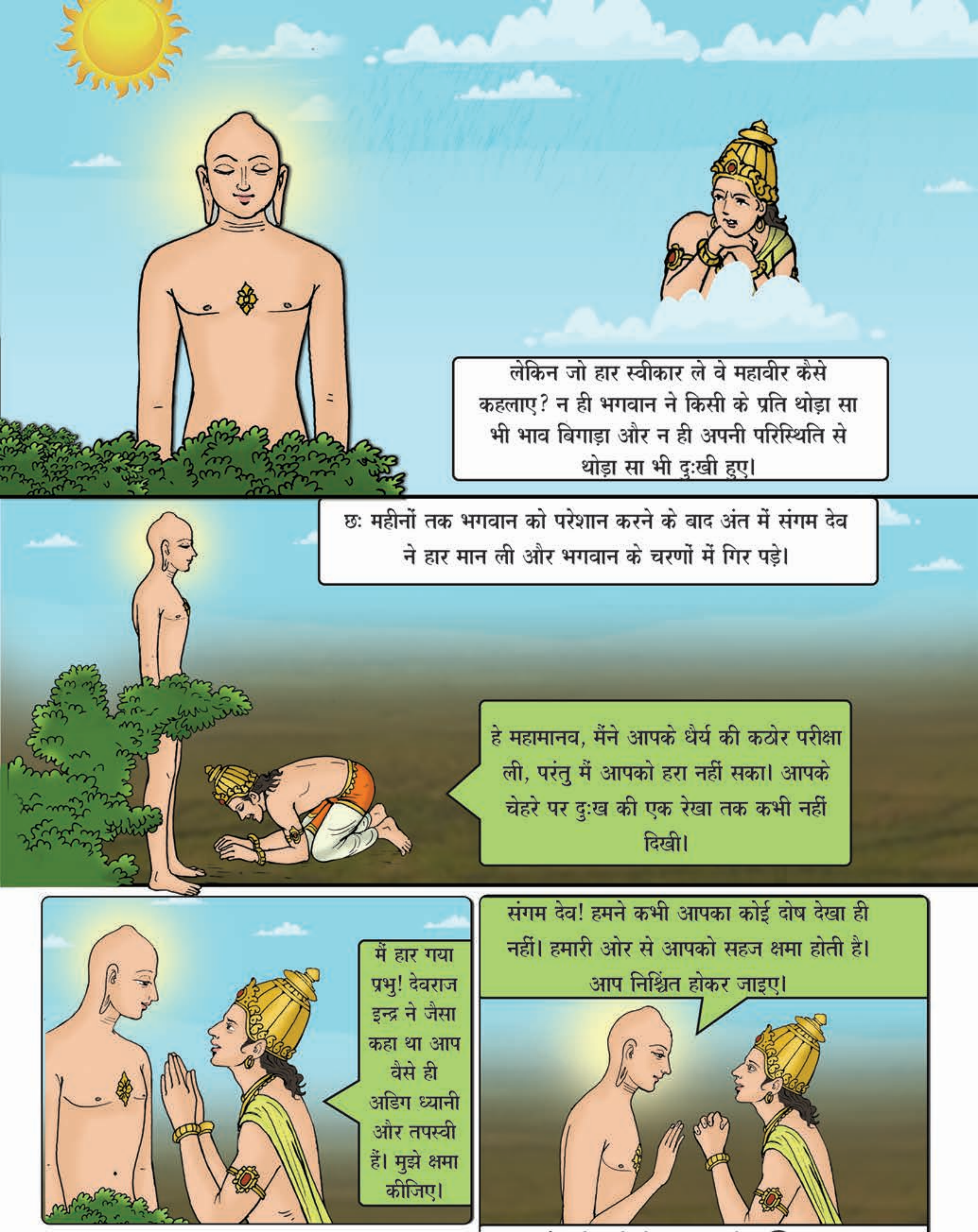

भगवान कौशाम्बी नगरी की तरफ चल पड़े।

* पौराणिक मान्यता के अनुसार सबसे ऊँचा पर्वत।

गोशालक

एक सुहानी सुबह, एक युवक श्री महावीर भगवान के पास आया और कहा, "मैं गोशालक, आपका शिष्य बनना चाहता हूँ।"

गोशालक को भगवान से कोई जवाब नहीं मिला लेकिन वह भगवान के साथ ही रहने लग गया। उसने मन ही मन सोचा कि "आज नहीं तो कल, भगवान मुझे अवश्य स्वीकार लेंगे।" गोशालक महावीर की परछाई बनकर उनके पीछे-पीछे घूमने लगा।

एक दिन गोशालक ने एक तपस्वी का मजाक उड़ाया। गोशालक के शब्दों से क्रोधित होकर उस तपस्वी ने गोशालक पर तेजोलेश्या फेंकी। तेजोलेश्या अर्थात् शरीर में से अग्नि निकालकर जिस पर फेंकते हैं वह जलकर मर जाता है। करुणा के सागर भगवान ने तुरंत ही शीतलेश्या डालकर गोशालक को बचा लिया। तेजोलेश्या का प्रभाव देखकर गोशालक ने वह विद्या सीखने का निश्चय किया। उसने प्रभु से विनती की और उनके पास से तेजोलेश्या की विद्या सीख ली। भगवान के पास से विद्या प्राप्त करके वह स्वयं को ही भगवान समझने लगा। भगवान से अलग होकर उसने अपना एक अलग संप्रदाय स्थापित किया। वह अपने शिष्यों से कहने लगा कि वह खुद ही भगवान है, महावीर भगवान नहीं हैं। धीरे-धीरे वह खुले आम सबसे कहने लगा कि महावीर भगवान नहीं हैं, बल्कि वह खुद भगवान है।

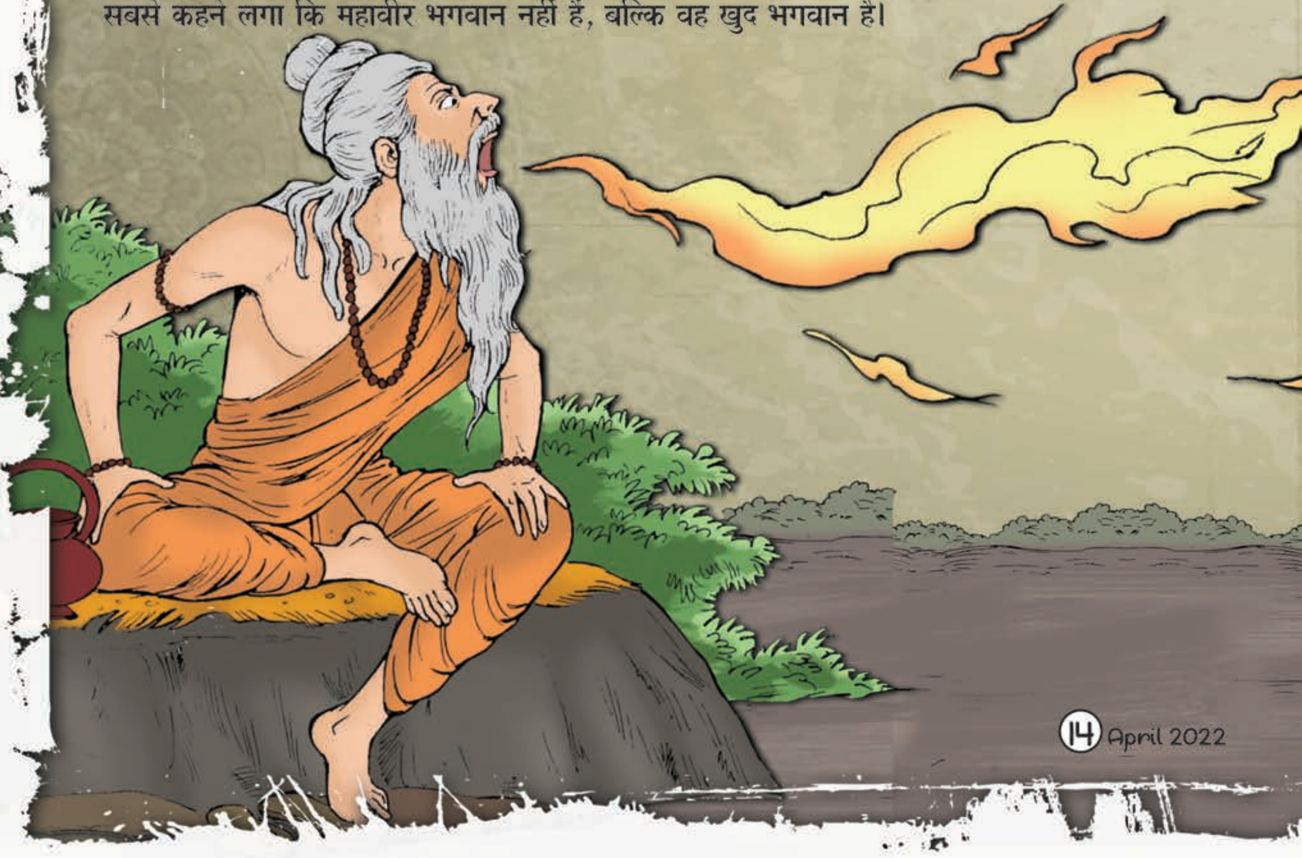

एक बार गोशालक ने भगवान महावीर की सभा में जाकर उनका बहुत अपमान किया। परंतु भगवान महावीर शांत रहे। वह उन्हें अत्यंत कड़वे शब्द बोलने लगा। यह सुनकर महावीर भगवान के शिष्य उत्तेजित हो गए।

एक शिष्य ने आकर गोशालक से कहा, "अरे गोशालक! यदि किसी गुरु या ब्राह्मण के पास से कुछ सीखा हो तो उनका भी विनय करना चाहिए, और तुम तो भगवान महावीर के ही शिष्य हो। सारी विद्या उन्हीं से प्राप्त की है, फिर भी उनका इतना घोर अनादर?"

शिष्य की बातों से गोशालक बहुत क्रोधित हुआ। उसने शिष्य के ऊपर तेजोलेश्या फेंकी। शिष्य वहीं के वहीं जलकर भस्म हो गया। दूसरा शिष्य गोशालक से कुछ कह पाता, उससे पहले उसने उसे भी जला दिया!

कोई तीसरा गोशालक के नज़दीक आए उससे पहले भगवान स्वंय आगे आ गए। गोशालक ने अपने एकमात्र प्रतिस्पर्धी (जिसके प्रति ईर्ष्या और स्पर्धा हो) को देखा। वह सात-आठ कदम पीछे हटा। फिर आगे आकर भगवान महावीर पर आँखें टिकाई। और अंत में भगवान पर तेजोलेश्या फेंकी। तुरंत ही आग के एक बड़े गोले ने भगवान महावीर के शरीर को चारों ओर से लपेट लिया।

गोशालक अट्टहास करने लगा। लेकिन दूसरे ही पल उसको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि तेजोलेश्या भगवान महावीर के शरीर में प्रवेश करने के बदले उनके शरीर की परिक्रमा करने लगी!

गोशालक इस अनोखी की घटना के बारे में कुछ सोचता उससे पहले ही तेजोलेश्या मुड़कर उसकी ओर आई और उसके शरीर में ही समा गई। पल भर में ही सुंदर दिखने वाला गोशालक बदसूरत हो गया। उसका मुँह काला हो गया।

महावीर अब भी शांति के अवतार बनकर खड़े थे। उन्होंने कहा, "गोशालक, कभी तुमको मुझ पर अंधा प्रेम था। और आज तुम द्वेष में अंधे हो गए हो। मुझे मार डालना चाहते हो। तुम्हारा दुश्मन कहीं बाहर नहीं हैं, बल्कि तुम्हारे भीतर के द्वेष और ईर्ष्या हैं। द्वेष और ईर्ष्या की आग तेजोलेश्या से भी ज्यादा भयानक है। शांत हो जा और आत्मकल्याण की ओर जा।"

जिसने भगवान पर इतना भयंकर उपसर्ग किया, उसके लिये भी भगवान के पास प्रेम भरे शब्द ही थे। प्रभु के मन में तो एक ही बात थी कि गोशालक किस तरह आत्म कल्याण की तरफ जाए।

भगवान की करुणा देखकर, गोशालक को अपने द्वारा किये गए दुर्व्यवहार पर बहुत पछतावा हुआ। उसने अपने पापों का पश्चाताप किया, अपनी गलतियों को स्वीकार किया और अपने पापों को भक्तों के सामने खुला किया। हृदयपूर्वक पछतावा करते हुए सातवें दिन उसकी मृत्यु हो गई।

मित्रों, नीरू माँ कहते थे कि यदि कोई तुम पर उल्टी करे तो तुम क्या करोगे? उसके साथ झगड़ा करोगे, उसे डाँटोगे, या फिर उसे पानी पिलाओगे? सही कहा! उसे आराम मिले उसके सभी प्रयास हम करेंगे। इसी तरह, यदि कोई हमारा अपमान करे, उल्टा-सीधा बोले तो वे सभी शब्द उल्टी करने के समान हैं। उस समय उसके साथ झगड़ा करने के बजाय उसे शांति मिले ऐसी प्रार्थना करें तो हमें भी शांति मिलेगी और उसका गुस्सा भी शांत होगा।

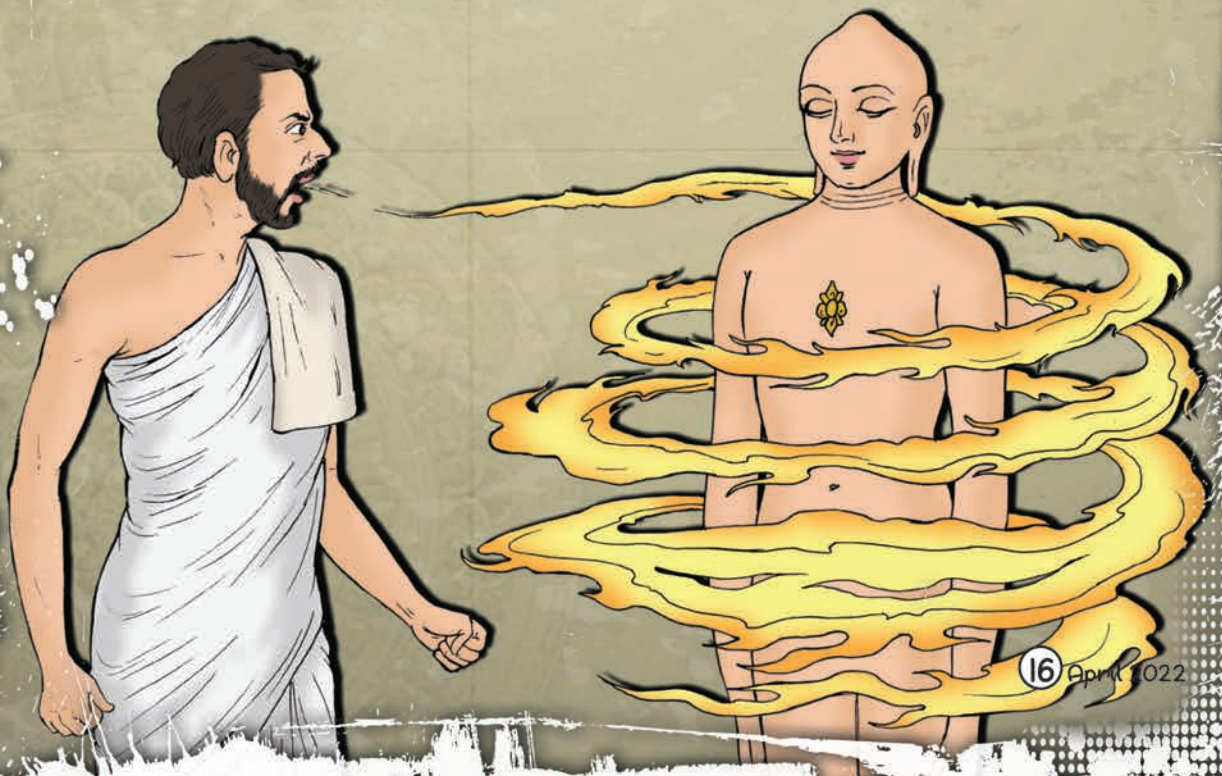

SANSKAR SINCHAN SHIBIR - 2022
FOR KIDS AND YOUTH

	Group - 8 to 12 Years		Group - 4 to 7 Years	
Center	**Date**	**Contact Number**	**Date**	**Contact Number**
Ahmedabad	21 March, 5 & 6 June	9429442597	2 June & 3 June	8141377833
Ankleshwar	-	-	17 April	7984196369
Amreli	29 May	9714543551	-	-
Baroda	21,22 May	9428767383	15 May	9825018956
Bharuch	29 May	9662520998	-	-
Bhavnagar	21,22 May	9558860259	-	-
Bhuj	28,29 May	8200303866	31 May	9429297223
Dhoraji	15 May	9574046082	-	-
Gandhidham	29 April	9428310787	-	-
Jamnagar	15,16 May	9137710901	18 May	9924780877
Mahesana	15 May	9427375177	-	-
Morbi	29 April	9978633035	26 April	9725199144
Mumbai	Grant Road, Dadar, Parle, Borivali, Mira Road, Ghatkopar, Mulund,Vashi	9867989202	Borivali & Ghatkopar	9820508608
Nadiad	1 May	7984836769	-	-
Rajkot	1,2 May	8849265224	28 April	9979620315
Surat	30 April, 1 May	9574008498	5 May	9913141600
Surendranagar	14,15 May	9512672433	-	-
Simandhar City	6,7 May	079-35002154	3 May	079-35002154
Veraval	26 May	9712191887	-	-
Pune	July	7774079780	-	-

Note : 1. In order to attend the summer camp, it is mandatory to register at a near by centre. The registration charges are non-refundable.

2. The registration for the youth and kids will be done based on the pre-fixed dates as per their age and standard. The registration will be closed 7 days before the camp start date. Thereafter, additional tatkal charges will have to be paid for the registration.

3. Registration for attending the summer camp at Simandhar City will have to be done at 'Store Of Happiness' within the Trimandir Sankul between 10.00 AM to 12 noon and 4.00 PM to 7.00 PM in the evening. Registrations have to be done 5 days prior to the summer camp. The registration will starts from 1st April Contact Number - 079-35002154.

ग्वाले का उपसर्ग - कहानी बनाए

नीचे दी गई कहानी के हिस्सों की उपयुक्त क्रम संख्या तय करो। पन्ना कट करके क्रम के अनुसार सेट करके बुकलेट बनाओ। बुकलेट का वीडियो व्हाट्सेप नंबर 9313665562 पर 15 अप्रैल को सबसे पहले वीडियो भेजने वाले को प्राइज़ दिया जाएगा।

उसने एक नुकीली कील ली और इधर-उधर देखे बगैर भगवान महावीर के कानों में ठोक दी।

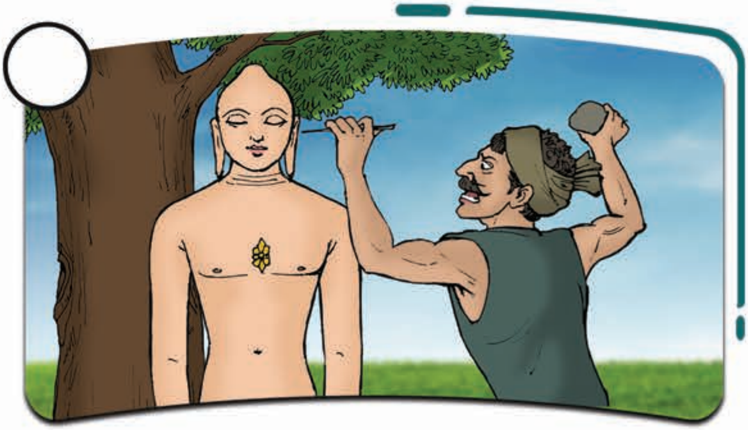

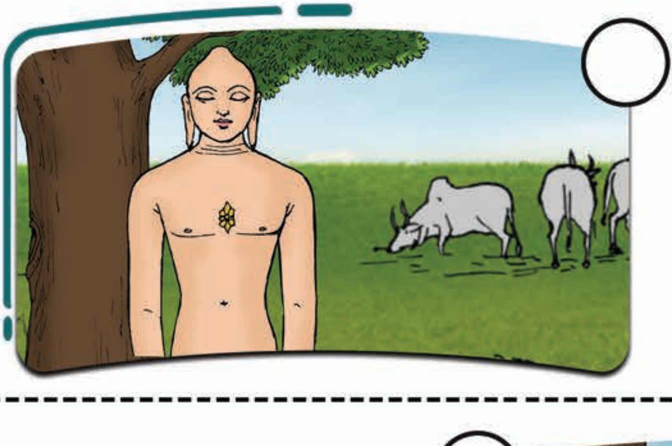

ग्वाला बैलों को वहाँ छोड़कर चला गया। बैल चरते-चरते आगे निकल गए।

देवार्य, मेरे बैलों का ध्यान रखना। मैं अभी आता हूँ।

इतनी असहनीय पीड़ा के बावजूद न महावीर का ध्यान भंग हुआ, और न ही उनके भीतर क्रोध और द्वेष की भावना जाग्रत हुई।

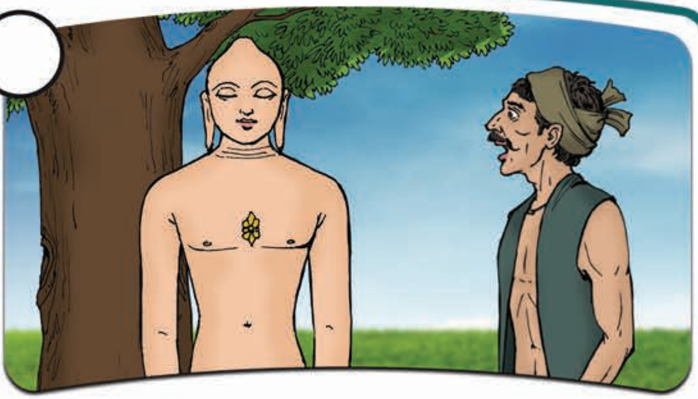

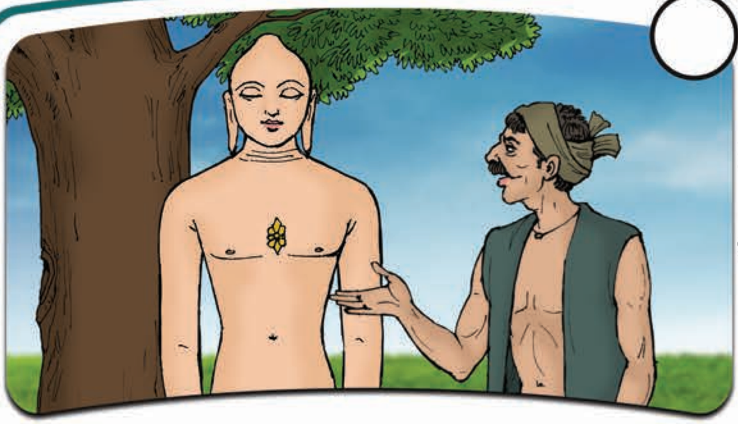

ग्वाले ने वापस आकर बैलों के बारे में पूछा। भगवान मौन रहे। ग्वाले ने फिर से पूछा। लेकिन भगवान तो ध्यान में लीन थे। कोई भी जवाब नहीं मिलने के कारण ग्वाला आग बबूला हो गया, "ढोंगी साधु, लगता है तुम्हारे कान फूट गए हैं। रूको, मैं अभी इनका इलाज करता हूँ।"

यह ग्वाला भगवान के त्रिपुष्ठ वासुदेव के भव में शय्यापालक था जिसके कानों में त्रिपुष्ठ वासुदेव ने उबलता हुआ शीशा डलवाया था।

Scan QR Code

त्रिपुष्ठ वासुदेव के भव की कहानी यहाँ पढ़ो।

Akram Express

April 2022
Year : 17, Issue : 12
Conti. Issue No.: 109

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

पिछले अंक की कविता का सही जवाब देने वाले genius kids

जवाब - वीरों के वीर महावीर

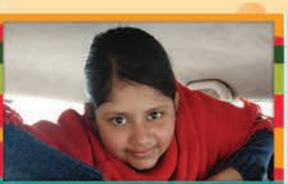

Name -Aditri Shrivastavan
City - Bhopal, MP

Name -Nira Prajapati
City - mehsana

Name - Mansi Jesani
City - Amreli

Name - Vanshika
City - Ludhiana, Punjab

Name - Ansh vishavadiya
City: Rajkot

Name - jinal Dabhi
City - Surendranagar

Name - Bhavya Sakhiya
City - Rajkot

Name - Shlok Patel
City: Vadodara

FIT રહીએ ANANDMA રહીએ

Walk with Pujyashree

Scan QR Code

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **Whatsapp** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025